नाम, आपको किसी बंधन में नहीं रहने देता। भगवान् कहते हैं, 'प्रेमपूर्वक यदि नाम एक बार जपा जाए तो भवसागर सूख जाता है। तैरना उसे पड़ता है जो अपनी बाँह परमेश्वर को नहीं पकड़ाता। जिसने अपनी बाँह परमेश्वर श्री राम को पकड़ा दी है, उसके लिए सागर सूख जाता है। पानी ही नहीं है, तो तैरना कहाँ है? उसके लिए सागर नहीं रहता। उसको तैरने की आवश्यकता कहाँ रहती है ? वह माया जंजाल में नहीं फंसा करता। एक बार आकर प्रेमपूर्वक, मेरे आमने–सामने हो जाओ। प्रश्न उठता है अनेक बार हमने पुकार के भी देखा पर वह आता नहीं। शर्त रखी है परमात्मा ने अपने स्वभाव में। 'निस्सहाय हो कर पुकारोगे तो मैं अनसुनी नहीं करता। और सहारों का भी आश्रय लेकर मुझे पुकारोगे तो मैं इतनी आसानी से सुनता नहीं।' एक शर्त रख दी। क्या पुकारना अनिवार्य है ? जीवन में ऐसे भी तो अवसर आते होंगे, सोए सोए ही छत गिर जाती है, परमेश्वर को पुकारने का अवसर भी नहीं मिलता। क्या ऐसे व्यक्तियों को बिना आसरे के ही मरने देता है? क्या ऐसे व्यक्तियों की परमेश्वर रक्षा नहीं करता ? कैसा दयालु है ? कैसा कृपालु है? अनेक प्रश्न चिन्ह आ जाते हैं, उसके स्वभाव पर।

एक और स्वभाव –मुझे बाँधना ही आता है, मुझे खोलना नहीं आता। सखियो, मैंने बाँधना ही सीखा है। आप जहाँ मरज़ी जाते रहो, जहाँ मरज़ी भटकते रहो, जिसको मैंने बाँध लिया है, उसको मैं छोड़ता नहीं। आज एक सखी के घर नन्हे–मुन्ने भगवान् कृष्ण चले गए। माखन चोरी करते हुए पकड़े गए। सखी ने पकड़ लिया, क्यों चोरी कर रहे हो ? तू मेरे घर में आया ही क्यूँ? भगवान् कहते हैं, 'सखी तेरे पति की कसम आगे से तेरे घर नहीं आऊँगा।' मेरे पति की कसम क्यूँ खाते हो ? 'अच्छा तेरे बाप की कसम, अब इसके बाद कभी तेरे घर नहीं आऊँगा।' 'सखी और चिढ़ गई। कहती है घर मेरा है। भगवान् कहते, 'सखी रोज़ कथा सुनती हो, लेकिन अभी तक भी, मैं और मेरा नहीं गया। अरे सब कुछ मेरा है। मान ले इस बात को, मैं अपने ही घर आया हूँ, तू मुझे क्यों निकाल रही है।' वह निकाल रही है भगवान् निकल नहीं रहे। तू जितना मरज़ी मुझे निकाल पर यह घर मेरा है, मैं अस्वीकार नहीं करता। यह भगवान् का स्वभाव है। सखी मानी नहीं और पकड़ कर बाँध देती है। कस कर बाँधती है, पहले पूछती है, तूने माखन खाया, मैंने अपनी आँखों से देखा है। भगवान् कहते हैं, 'नहीं तुझे गलती लगी है, इस ढेले में चींटी चल रही थी, मैं उसे निकालने लगा तो उतने में तू आ टपकी, तुझे लगा कि मैं माखन चोरी कर रहा हूँ। ठीक बात है पर यह तेरी अंगुली तो भर गई पर यह तेरे मुख पर माखन कैसे आ गया? अरे उसी वक्त मेरे मुख पर मक्खी बैठ गई उसे हटाने लगा तो माखन मेरे मुख पर लग गया। मैंने माखन खाया कहाँ।'

यह बात सखी को सन्तुष्ट नहीं कर पाई, उसने भगवान् को बाँध दिया–ज़ोर से। भगवान् कहते हैं,'इतना कसके तो न बाँध, देखो न, मेरा कोमल शरीर है, मुझे दर्द होती है।' सखी को तरस आ गया, उसने थोड़ा सा कान्हा को ढीला कर दिया। ढीला करने के बाद स्वयं और सखियों को अपनी सहेलियों को बुलाने चली गई। आओ देखो मैंने आप सब के कान्हा को बाँध रखा है। भगवत् प्रेम इस प्रकार का है, भक्ति इस प्रकार की है, जहाँ इस में प्रदर्शन की भावना आ जाती है, भक्ति हवा हो जाती है। भगवान् कृष्ण को मौका मिला, ढीली रस्सी थी, भाग गए। 'सखी तुझे बाँधना ही नहीं आता।' सखी कहती है, अच्छा तो तू बाँध के दिखा। किस्मत–वाली सखी, बाँध ही रहे थे, समाधि लग गई। सखी का नाम, रूप सब खत्म हो गया, तल्लीन हो गई, समाधि लग गई। सखी थोड़ी देर बाद मुस्कराते हुए कहने लगी, मैंने भी तो तेरी रस्सी ढीली की थी, इतना कस के न बाँध। भगवान् कहने लगे,'सखी तुझे बाँधना नहीं आता, मगर मुझे बाँधना ही आता है। तूने ढीली कर दी थी, मगर मैं ढीली नहीं कर सकता, यह मेरा स्वभाव ही नहीं है, मैं जिसको एक बार पकड़ लेता हूँ, पकड़ ही लेता हूँ, मुझे छोड़ना नहीं आता।'

(परम पूजनीय श्री महाराज जी का यह लेख आने वाले अंक में जारी रहेगा।)

परम पूजनीय श्री महाराज जी के पत्रों के अंश

Leaving the world is not solution. Where will you go where there is no world. Develop mental detachment. Work as a servant of the Lord & perform all duties assigned by Him honestly, truthfully to please Him & not the world. This is not impossible. God's Grace be upon you to bless you with adequate strength.

Loving Jai Jai Ram.

17.11.2004

संसार छोड़ना कोई समाधान नहीं है, ऐसी किस जगह पर आप जाएँगे जहाँ कोई संसार न हो। मानसिक अनासक्ति विकसित कीजिए। परमात्मा के चाकर बन कर काम कीजिए। उसके द्वारा दिए गए सभी काम पूरी ईमानदारी और सच्चाई से, उसे ही प्रसन्न करने के लिए कीजिए न कि संसार को। ऐसा करना असंभव नहीं है। परमेश्वर कृपा आप पर बनी रहे और वह आपको पर्याप्त शक्ति दे। सप्रेम जय जय राम।

Thanks a lot. May Divine Light dispel darkness from our lives. May we recognise our Divinity & become as pure as Lord is.

Most loving Jai Jai Ram

& Joyous Diwali.

5.11.2004

बहुत धन्यवाद। दिव्य ज्योति हमारे जीवन से अन्धकार दूर करे। हम अपनी दिव्यता को पहचान सकें और परमेश्वर की तरह पवित्र बने। सप्रेम जय जय राम व आनन्दमयी दिवाली की बधाईयाँ।

Best wishes to all of you for a marvellous new year and a joyous Diwali.

Loving Jai Jai Ram.

3.XI.2005

आप सभी को अनूठे नए साल और आनन्दमयी दिवाली की बधाईयाँ। प्यार भरी जय जय राम।

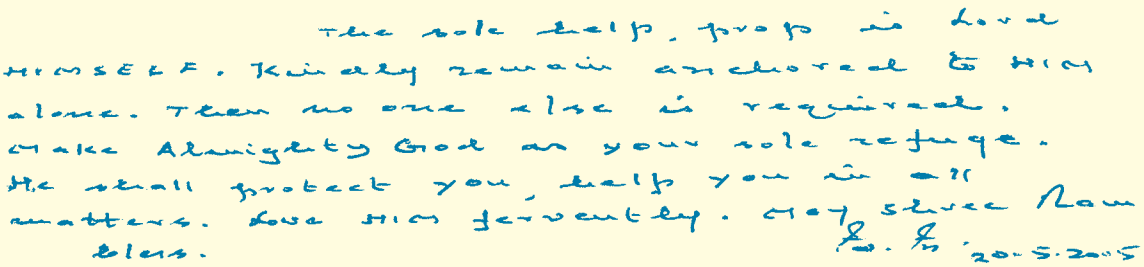

The sole help, prop is Lord HIMSELF. Kindly remain anchored to Him alone. Then no one else is required. Make Almighty God as your sole refuge. He shall protect you, help you in all matters. Love Him fervently. May Shree Ram bless.

20-5-2005

एक मात्र सहारा प्रभु स्वयं हैं, कृपया केवल उससे ही जुड़े रहिए, फिर किसी और की आवश्यकता नहीं रहेगी। सर्वशक्तिमान परमात्मा की एकमात्र शरण में जाइए। वह आपकी रक्षा करेगा और सभी विषयों में आपकी सहायता भी। उससे पूरी शिद्दत से प्रेम कीजिए। प्रभु राम आप पर कृपा करें। ■

अनुभूति

'प्रार्थना का प्रभाव'

डेढ़ साल से मुझे हाई बी पी था और साँस लेने में भी मुश्किल होती थी। दवाइयों का कोई असर नहीं हो रहा था। कई बार जाँच हुई, परन्तु कुछ पता नहीं चल रहा था। बाद में, डॉक्टर की सलाह पर सीटी–स्कैन करवाने पर पता चला कि थाईराइड ग्लैंड बाहर बढ़ने की बजाय, अन्दर बढ़ गया है और साँस की नली उसमें लिपट गई है। ऑपरेशन के अलावा कोई चारा नज़र नहीं आ रहा था, लेकिन ऑपरेशन रिस्की भी था, इसलिए कई सर्जनों ने ऑपरेशन करने से मना कर दिया। उनका मानना था कि ऑपरेशन के बाद आवाज़ वापस न आने का खतरा है। इसके अलावा, यह भी सम्भव था कि ऑपरेशन के लिए पसलियाँ काटनी पड़ें और साँस की नली लगानी पड़े। ऑपरेशन जान–लेवा हो सकता था, इसलिए निर्णय लेना मुश्किल हो रहा था। मेरे पति और बेटे को लगा कि यह जोखिम उठाना ही पड़ेगा और उन्होंने डॉक्टर को ऑपरेशन करने की अनुमति दे दी।

ऑपरेशन के लिए जब मुझे ओ टी में ले जाया गया, तो मैंने उन डॉक्टर से मिलने का अनुरोध किया जिन्हें ऑपरेशन करना था। उनके आने पर जब मैंने उनसे हाथ मिला कर 'ऑल दी बैस्ट' कहा तो वे हँसने लगे। उसके बाद मैंने हाथ जोड़कर अपने राम जी को याद किया और गुरु महाराज से विनती की, कि आप तो स्वयं डॉक्टर हैं, आपको किसी और डॉक्टर की क्या आवश्यकता ? इन डॉक्टर के हाथों द्वारा ऑपरेशन आप ही कीजिएगा। प्रार्थना करने के बाद मैंने डॉक्टर को ऑपरेशन करने की अनुमति दे दी। ऑपरेशन के लिए जब मुझे बेहोश करने ही वाले थे, उसी समय मैंने डॉक्टर की आवाज़ सुनी, वे कुछ चीज़ें माँग रहे थे। ओ टी में भगदड़ मच गई कि डॉक्टर ने अपना निर्णय बदल दिया। अब वे पसलियाँ काटने की बजाय, गले से ऑपरेशन करेंगे। पाँच घण्टे ऑपरेशन चला।

बेहोशी से निकलते ही मैंने देखा खूब बड़े हल्दी रंग का एक गोल आकार जिस पर रोली के रंग से बड़े बड़े अक्षरों में 'राम' लिखा था। मैं साथ में 'राम राम' बोलने लगी और मुस्कुराती जा रही थी। मुझे बार–बार डॉक्टर समझाने की कोशिश कर रहे थे, कि इस हालत में बोलना ठीक नहीं है, लेकिन मुझ पर तो मेरे प्रभु की कृपा हो रही थी। मैं लगातार श्री अधिष्ठान जी को देख रही थी।

वहाँ मौजूद सभी लोग हैरान थे, कि यह सब कैसे हो गया? मैंने बाद में उन्हें बताया कि मेरे गुरु महाराज आए थे और ऑपरेशन उन्होंने ही किया था। डॉक्टर और उनकी टीम के लिए यह किसी चमत्कार से कम नहीं था। जितनी देर ऑपरेशन चल रहा था, उतनी देर मेरे पति बाहर बैठे 'श्री अमृतवाणी जी' का पाठ कर रहे थे। हमें साक्षात् अपने प्रभु और गुरुजनों की कृपा देखने के लिए मिली। यह है प्रार्थना का प्रभाव।

(जुलाई 2015) ■

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

17 जून से सितम्बर 2016

साधना सत्संग, खुले सत्संग एवं नाम दीक्षा का विवरण

- **मेरीलैंड**, अमेरिका में 19 जून को अमृतवाणी सत्संग हाल के स्थापना दिवस पर खुला सत्संग लगा।
- **सैलर्सबर्ग**, पैन्सलवेनिया अमेरिका में 23 से 26 जून तक खुला सत्संग लगा। जिसमें 260 व्यक्ति सम्मिलित हुए और अमेरिका में 23 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार** में 30 जून से 3 जुलाई तक परम पूजनीय डा. विश्वामित्र जी के महाराज के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में साधना सत्संग लगा।
- **बीकानेर**, राजस्थान में 10 जुलाई को नवनिर्मित श्रीरामशरणम् का उद्घाटन हुआ, जिसके पश्चात् 122 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

नवनिर्मित श्रीरामशरणम्, बीकानेर

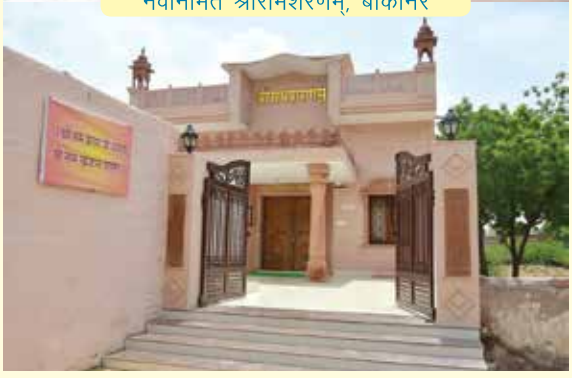

- **हरिद्वार** में 14 से 19 जुलाई तक गुरुपूर्णिमा (व्यास पूर्णिमा) के उपलक्ष्य में पंचरात्रि साधना सत्संग लगा। 14 जुलाई को 58 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **दिल्ली**, श्रीरामशरणम् में 19 जुलाई को गुरुपूर्णिमा (व्यास पूर्णिमा) के पावन अवसर पर 112 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **होशियारपुर**, पंजाब में 19 जुलाई को एक दिवसीय खुला सत्संग लगा जिसमें 44 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **दिल्ली**, श्रीरामशरणम् में 27 से 29 जुलाई तक परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में खुला सत्संग लगा।
- **काठमण्डू**, नेपाल में 30 जुलाई को एक दिवसीय खुला सत्संग लगा जिसमें 52 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **रोहतक**, हरियाणा में 13 व 14 अगस्त को खुले सत्संग का आयोजन हुआ।
- **रेहटी**, जिला सिहोर, मध्य प्रदेश में 14 अगस्त को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के पश्चात् नाम दीक्षा का आयोजन हुआ। जिसमें भारी वर्षा के बावजूद लगभग 2500 व्यक्ति सत्संग में सम्मिलित हुए और 1038 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **कोलकता** में 21 अगस्त को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के पश्चात् 53 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **दिल्ली** श्रीरामशरणम् में 21 अगस्त को साप्ताहिक सत्संग के पश्चात् 43 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **रतनगढ़**, राजस्थान में 27 व 28 अगस्त को खुला सत्संग लगा। जिसमें 395 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **नामरूप**, आसाम 31 अगस्त को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के पश्चात् 96 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **रिवाड़ी**, हरियाणा में 3 व 4 सितम्बर को खुले सत्संग का आयोजन हुआ। जिसमें 64 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

निर्माणाधीन श्रीरामशरणम् की प्रगति

- **अब्दुल्लागंज**, नज़दीक भोपाल, मध्य प्रदेश में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य प्रगति पर है।

Sadhna Satsang (October 2016 to March 2017)		
Haridwar(Ramayani)	2 Oct to 11 October	Sunday to Tuesday
Haridwar	11 to 14 November	Friday to Monday
Gwalior	25 to 28 November	Friday to Monday
Indore	13 to 16 January	Friday to Monday
Hansi	3 to 6 February	Friday to Monday

Open Satsang (October 2016 to March 2017)		
Jammu	14 to 16 October	Friday to Sunday
Pathankot	22 to 23 October	Saturday & Sunday
Hissar	5 to 6 November	Saturday & Sunday
Fazalpur, Kapurthala	19 to 20 November	Saturday & Sunday
Hoshangabad	8 to 9 December	Thursday & Friday
Bhiwani	10 to 11 December	Saturday & Sunday
Surat	17 to 18 December	Saturday & Sunday
Sujanpur	24 to 25 December	Saturday & Sunday
Delhi (Ramayan Path)	31 December	Saturday
Jhabua	8 to 10 January	Sunday to Tuesday
Mumbai	21 to 22 January	Saturday & Sunday
Pilibanga	28 to 29 January	Saturday & Sunday
Bhopal (Ramayan Path)	10 to 12 February	Friday to Sunday
Bilaspur	17 to 19 February	Friday to Sunday
Kohlapur, Nepal Ganj	24 February	Friday
Delhi (Holi)	11 to 13 March	Saturday to Monday
Jhabua (Maun Sadhna)	27 March to 5 April	Monday to Wednesday

Naam Deeksha in Other Centers (October 2016 to March 2017)		
16 October 2016	Sunday	Jammu
23 October 2016	Sunday	Pathankot
6 November 2016	Sunday	Hissar
20 November 2016	Sunday	Fazalpur, Kapurthala
25, 26 & 27 November 2016	Friday, Saturday & Sunday	Gwalior
27 November 2016	Sunday	Chambi
9 December 2016	Friday	Hoshangabad
11 December 2016	Sunday	Bhiwani
18 December 2016	Sunday	Surat
25 December 2016	Sunday	Sujanpur
03 January 2017	Tuesday	Dahod (Gujarat)
04 January 2017	Wednesday	Kushalgarh (Raj.)
05 January 2017	Thursday	Anjana (Raj.)
06 January 2017	Friday	Kupda (Raj.)
07 January 2017	Saturday	Bolasa (M.P.)
08 January 2017	Sunday	Jhabua (M.P.)
15 January 2017	Sunday	Indore
22 January 2017	Sunday	Mumbai
29 January 2017	Sunday	Pilibanga
5 February 2017	Sunday	Hansi
12 February 2017	Sunday	Bhopal
19 February 2017	Sunday	Bilaspur
24 February 2017	Friday	Kohlapur, Nepal Ganj

Naam Deeksha in Delhi, Shree Ram Sharnam (October 2016 to March 2017)	
30 October 2016	Sunday 11 AM
25 December 2016	Sunday 11 AM
22 January 2017	Sunday 11 AM
26 February 2017	Sunday 11 AM
26 March 2017	Sunday 11 AM

Purnima (October 2016 to March 2017)	
16 October 2016	Sunday
14 November 2016	Monday
13 December 2016	Tuesday
12 January 2017	Thursday
10 February 2017	Friday
12 March 2017	Sunday

QUIZ ON RAMAYAN JI

Choose the correct answers of the following questions:

Q1. Who advised Kaikeyi to ask Dashrath to make Bharat the king of Ayodhya?
A. Devi B. Taraka C. Manthra D. Parvati

Q2. By whose parents was Dashrath cursed?
A. Ekalavya B. Karna C. Shravana D. Abhimanyu

Q3. What did Bharat take from Lord Rama after he met him in the forest and returned to Ayodhya?
A. Weapons B. Paduka/slippers C. Keys D. Money

Q4. What is the name of the lady whom Lord Rama released from a curse (she had become a rock after she was cursed by her husband sage Gautama)?
A. Mandodari B. Sumitra C. Ahalya D. Sita

Q5. To which two brothers did Shurpanakha go to complain, after Laxmana cut off her nose and ears?
A. Luv & Kush B. Krishna & Balarama C. Duryodhana & Dushyasana D. Khara & Dooshana

Q6. Who was the great sage in the forest of central India whom Lord Ram met? (Hint : This sage was responsible for stopping the growth of the Vindhya mountains)
A. Agasthya B. Vashishta C. Vishwamitra D. Suteekshan

Q7. What is the name of Jatayu's brother who gave information about Ravana's whereabouts to the army of Vanaras when they went in search of Goddess Sita ?
A. Jambavanta B. Angada C. Sampati D. Mareecha

Q8. What is the name of the brother of Ravana who left him to join Lord Rama after Ravana refused to listen to his advice to return Goddess Sita to Lord Rama's custody?
A. Kumbhakarna B. Dushana C. Vibhishana D. Jarasandha

Q9. What is the name of the saintly lady who had been waiting for Lord Rama for years in the forest and when Lord Rama met her, she offered him fruits which He ate?
A. Shabri B. Gandhari C. Manthara D. Taraka

Q10. What is the name of the vanara king who had been banished from his kingdom by his brother Baali and who became a close friend of Lord Rama?
A. Angada B. Sugreeva C. Kuber D. Jambvanta

Answers: 1. C, 2. C, 3. B, 4. C, 5. D, 6. A, 7. C, 8. C, 9. A, 10. B

परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज जी
के मुखारविन्द से

'जो परमेश्वर के हवाले अपने आपको कर देता है,
परमेश्वर उसका सब कुछ करने वाले होते हैं,
सब कुछ करते हैं।'

यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित
एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, ए–27, नारायणा औद्योगिक ऐरिया, फेज़ 2, नई दिल्ली 110028 से मुद्रित, संपादकः मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and
printed at Rave Scans Private Limited, A-27, Naraina Industrial Area, Phase 2, New Delhi 110028. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली
ईमेल: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

RNI No. "Applied for".